पाठ 8. हिम्मती सुमेरा

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य बच्चों को कठोर परिश्रम करने तथा कठिन परिस्थितियों में हिम्मत न हारने की सीख देना है। हमें मुश्किलों से घबराना नहीं चाहिए बल्कि हिम्मत और साहस के साथ उनका मुकाबला करना चाहिए।

पाठ का सारांश

यह एक ऐसे साधारण-से गरीब बालक की कहानी है जिसकी माँ नहीं है। उसके पास एक बहुत प्यार करने वाले पिता हैं और ढेर सारी हिम्मत। पिता ने उसे सच्चाई और ईमानदारी से जीना सिखाया है। एक शाम पिता की तबियत खराब हो गई और उन्हें लकवा मार गया। सुमेरा बहुत पढ़ना चाहता था लेकिन अब कैसे संभव था? उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने तय किया कि वह पढ़ेगा भी और सब्ज़ी और फल बेचकर कमाएगा भी। उसने अपने मास्टर साहब से तीस रुपये उधार लिए। उन रुपयों से उसने संतरे खरीदे और सब्ज़ीवालों के बीच जाकर बैठ गया। शाम तक उसके पास 36 रुपये भी आ गए और चार संतरे भी बच गए। वह बड़ा खुश था। अब उसे सब कुछ आसान लग रहा था। लेकिन दूसरे दिन जब वह फल बेचने बैठा तो एक पुलिसवाला आया। सभी ने उसे उस पुलिसवाले को दो रुपये देने को कहा। उसने बिना किसी वजह दो रुपये देने से इनकार कर दिया। अगले दिन कमेटी की गाड़ी आई और उसके संतरे उठाकर ले गई। सुमेरा हिम्मत कर उस व्यक्ति के पास पहुँचा जिसे उसके पिता दिल्ली का राजा बताते थे। सुमेरा ने उस पुलिसवाले की शिकायत की। राजा साहब दंग रह गए। उन्होंने उस बच्चे की हिम्मत देख उसे काम करने का लाइसेंस दिलवाया और सौ रुपये इनाम भी दिए। सुमेरा ने परिश्रम करके अपना कारोबार आगे बढ़ाया और अपने पिता का इलाज़ भी करवाया। दिल्ली के सब्ज़ी बाज़ार में आज भी सुमेरा की दुकान है।

अध्यापन संकेत

बच्चों से कहानी का मौन वाचन करने को कहें। मौन वाचन करते समय बच्चे कठिन शब्दों को रेखांकित करते चलें। पढ़े गए परिच्छेद से संबंधित प्रश्न भी बनाएँ। कहानी का वाचन कर लेने पर उन्हें कहानी को कक्षा में संक्षेप में सुनाने को कहें। बच्चों को एक-एक अंश संवाद-शैली में लिखने को कहें और उसका कक्षा में मंचन करवाएँ।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- हिम्मत जीवन में क्यों आवश्यक है?
- समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध कैसे लड़ा जा सकता है?
- सुमेरा अगर पुलिस अधिकारी के खिलाफ़ न लड़ता तो उसका क्या होता?
- सुमेरा ने जो कुछ किया वह सही था या गलत?